ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 31-34
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

रीतिकाव्य के शब्दकला–नायक : बिहारी

यामिनी राय
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, श्यामेश्वर महाविद्यालय, सिकरीगंज – गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 30.08.2020, Revised- 05.09.2020, Accepted - 08.09.2020 E-mail: - kumarrai@yahoo.com

सारांश : ***दोहाकाव्य–परम्परा में हिन्दी के रीति–कवि बिहारी का उल्लेखनीय स्थान है। हिन्दी के खुसरो, कबीर, तुलसी, रहीम, वृन्द आदि प्रमुख दोहाकारों में कविवर बिहारी अन्यतम और विशिष्ट हैं। प्रत्येक अवसर और प्रसंग के दोहे उनकी सतसई में यथास्थान प्रतिष्ठापित हैं।***

रीतिकाव्य के शब्दकला–नायक बिहारी से सभी सहृदय पाठक परिचित हैं। रसिकजन तो और अधिक। हिन्दी–पट्टी में रहने वाले शिक्षित–अशिक्षित प्रायः सभी साहित्यप्रेमी बिहारी के प्रसिद्ध दोहों से परिचित हैं। शिक्षित सौ–दो सौ दोहों का पाठ दोहराता दिखलाई देता है तो अशिक्षित भी दो–चार दोहे अपनी ज़बान पर बैठाये मिल जाता है। कबीर और बिहारी ही ऐसे दोहाकार हैं, जिनके दोहे पाठकों–श्रोताओं के समीप हैं। बिना पढ़े भी पढ़ों से सुनकर लोगों को याद हैं।

कुंजीभूत शब्द– दोहाकाव्य, परम्परा, अन्यतम, विशिष्ट, अवसर, सतसई, प्रतिष्ठापित, शिक्षित–अशिक्षित।

ऐसे प्रसिद्ध दोहाकार बिहारी ने सात सौ दोहे रचकर 'बिहारी–सतसई' की रचना की है। जगन्नाथदास रत्नाकर ने 'बिहारी–रत्नाकर' में 713 दोहे संकलित किये हैं। बिहारी की एकमात्रा रचना 'बिहारी–सतसई' प्राप्त है। बिहारी ने कोई प्रबन्धकाव्य या कि महाकाव्य नहीं रचा। सिर्पफ और सिर्फ मुक्तक–शैली में 'दोहा' छन्द प्रणीत किया। दरबारों से सम्बद्ध होने के कारण, राज्याश्रयी संरक्षण–सम्मान प्राप्त होने के कारण बिहारी को अपनी काव्यकला के प्रदर्शन का मुक्त अवसर मिला। जब प्रत्येक दोहे पर एक–एक अशर्फी का ईनाम मिल रहा हो, तब वह कवि किसी महाकाव्यात्मक रचना के पेफर में क्यों पड़ता? बिहारी ने अपने मुनाफे और सम्मान के मनोविज्ञान को समझकर, आश्रयदाता के मनोविज्ञान को पढ़कर और युगीन काव्यरीति के अन्तःविज्ञान को बूझकर 'दोहा' जैसे छोटे मुक्तक को पकड़ा। दरबार में सुनाकर वाहवाही ली और कलात्मक प्रयोगकर काव्येतिहास में बड़ी जगह भी बनायी। विदग्धता–रसमयता–कलात्मकता, विविधता और अर्थव्यंजकता ने बिहारी को हिन्दी का रीतिसिद्ध कवि और बहुज्ञ कवि बनाकर उनकी काव्यकीर्ति को अक्षुण्ण कर दिया। हिन्दी साहित्य के इतिहास में सामान्यतः 1700 वि0 से 1900 वि0 तक की अवधि को 'उत्तरमध्यकाल' कहा गया है। हिन्दी साहित्य के इतिहास–लेखकों ने हिन्दी साहित्य के उत्तरमध्यकाल को 'रीतिकाल' की संज्ञा प्रदान की है। हिन्दी साहित्य के मध्यकालीन कवियों में भी कितने ही ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने काव्य की रचना पद्धति को 'रीति' नाम दिया। चिन्तामणि, देव, मतिराम और भूषण आदि ऐसे ही कवि हैं, जिन्होंने रीति शब्द का प्रयोग रचना–पद्धति के लिए किया है। अर्थात् रीतिकाल में 'रीति' शब्द को व्यापक अर्थ में ग्रहण किया गया है। रीतियुगीन काव्यभूमि पर दृष्टिपात करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस कालखण्ड को 'रीतिकाल' की संज्ञा दी। लगभग दो सौ वर्षों के इस कालखण्ड में देश की शासनसत्ता मुगलों के हाथ में थी। राजाओं और सामन्तों का जीवन वैभव–विलास तथा सुरा–सुराही–नारी के अधीन हो चला था। कवि भी इन्हीं राजाओं के अधीन होकर काव्य–रचना के लिए अभिशप्त था।

इतिहास की दृष्टि में हिन्दी साहित्य के उत्तर–मध्यकाल को विभिन्न नामों से जाना जाता है। मिश्रबन्धुओं ने इसे 'अलंकृतकाल', रामशंकर शुक्ल 'रसाल' ने 'कलाकाल' और विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने 'शृंगारकाल' की संज्ञा दी। अन्ततः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा दिया गया नाम 'रीतिकाल' ही प्रचलित और सर्वमान्य हुआ। काव्यगत प्रवृत्तियों को दृष्टिगत करते हुए रीतिकाव्य की तीन कोटियाँ निर्धारित की गयी हैं–

1. रीतिबद्ध कवि शास्त्र कविद्ध – चिन्तामणि, केशवदास, मतिराम, देव, भिखारीदास।
2. रीतिमुक्त कवि काव्य कवि – घनानन्द, बोधा, आलम, ठाकुर।
3. रीतिसिद्ध कवि शास्त्र–काव्योमय कवि – बिहारी, रसनिधि, सेनापति।

रीतिबद्ध कवि वे कहलाए जो स्वतन्त्र रूप से लक्षण रचना न करते हुए भी परम्पराओं को उसमें अन्तर्भुक्त

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

करते जा रहे थे। वह अपने अर्थान्तर में किसी–न–किसी काव्यांग का लक्षण बनती जा रही थी, स्वयं उदाहरण भी। बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि थे। 'बिहारी सतसई' में केवल एक तथ्य का उल्लेख मिलता है। उनके आश्रयदाता राजा जयसिंह थे और शेष उनका जीवन–वृत्त प्रायः परम्परा, जनश्रुति एवं अनुमान पर आधरित है।

इतिहास ग्रन्थों और शोध्कार्यों के साक्ष्य के आधर पर कविवर बिहारी का जन्म संवत् 1652 वि0 में ग्वालियर के समीप बसुआ गोविन्दपुर नामक गाँव में हुआ था। वे माथुर चौबे ब्राह्मण थे। जनश्रुति है कि बिहारी का बाल्यकाल बुन्देलखण्ड में बीता और विवाह के पश्चात् वे मथुरा में रहने लगे। उसी समय उन्होंने पफारसी–काव्य का अभ्यास किया और बादशाह शाहजहाँ से भेंट की। शाहजहाँ के दरबार में ही बिहारी का सम्पर्क अन्य राजाओं से भी हुआ। कई राज्यों से इनके लिए वृत्ति बँध गयी। बिहारी ध्न प्राप्त करने के लिए राजाओं–महाराजाओं के यहाँ जाया करते थे। एक बार बिहारी अपनी वृत्ति लेने जयपुर–नरेश राजा जयसिंह के यहाँ पहुँचे। वहाँ पहुँचने के पश्चात् उन्हें पता चला कि महाराज जयसिंह अपनी नवविवाहिता रानी के प्रेम में मुग्ध होकर महलों में ही पड़े रहते हैं तथा उन्होंने राज–काज छोड़ दिया है। सामन्तगण तथा प्रजा के लोग राजा के इस क्रिया–कलाप से दुःखी थे। उसी समय बड़ी रानी के कहने पर बिहारी ने एक दोहा लिखकर राजा के पास भेजा–

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल।
अली, कली ही सौं बँध्यौ, आगैं कौन हवाल।।

बिहारी के इस दोहे का राजा जयसिंह पर अद्भुत प्रभाव पड़ा और महाराज ने अत्यन्त प्रसन्न होकर काली पहाड़ी नामक ग्राम बिहारी को दे दिया। साथ ही प्रति छन्द पर एक मुहर पुरस्कार में देने का संकल्प किया। इसके पश्चात् बिहारी जयपुर रहने लगे और दरबारी कवि के रूप में अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करने लगे। प्रति छन्द पर एक मुहर का ईनाम पाने वाले बिहारी ने धीरे–धीरे कुल 700 दोहों की रचना कर डाली। संवत् 1720 वि0 में जयपुर दरबार में ही उनका निध्न हो गया।

बिहारी रीतिकाल के वरिष्ठ और वरेण्य कवि माने जाते हैं। बिहारी का सम्पूर्ण जीवन काव्य–साध्ना में ही व्यतीत हुआ। इसलिए उनका एक–एक दोहा मर्मस्पर्शी बन पड़ा है। बिहारी के दोहे हमारे समक्ष सौन्दर्य तथा प्रेम की मनोरम झाँकियाँ प्रस्तुत करते हैं। बिहारी की ख्याति का मूल आधर उनका अन्यतम ग्रन्थ 'सतसई' है। इसे ही 'सतसैया', 'बिहारी सतसई' और 'बिहारी–रत्नाकर' जैसे विभिन्न नामों से जानते हैं। उपलब्ध साक्ष्यों के आधर पर 'सतसई' में लगभग 713 दोहों का संकलन है। मुक्तक–परम्परा के दोहेतथा सोरठे इसमें संगृहीत हैं। गागर में सागर भर देने वाली 'बिहारी सतसई' रीतिकाल की अक्षय निधि है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखते समय कवि बिहारी के सम्बन्ध में यह टिप्पणी दी है–

दोहों को लिखते समय बिहारी का ध्यान लक्षणों पर अवश्य था, इसलिए हमने बिहारी को रीतिकाल के पुफटकर कवियों में न रखकर उक्त काल के प्रतिनिधि कवियों में ही रखा है।

'बिहारी सतसई' की लोकप्रियता का सबसे बड़ा आधार उसकी रस–रंजना और शृंगारिकता है। शृंगार एक ऐसा रस है जो सामाजिकों को अन्य रसों की अपेक्षा अध्कि आकर्षित करता है। 'बिहारी सतसई' रसिकों के कण्ठ का हार तो बनी ही, उन भक्तों के लिए भी महत्त्व रखती है जो नैतिकता और सदाचार या लोक–व्यवहार में रुचि रखते हैं। इस रचना में कवि ने रूप–सौन्दर्य और काव्य–सौन्दर्य विषयक दृष्टिकोण का ऐसा उपस्थापन किया है जो पाठक के भीतर बार–बार उसे पढ़ने का कौतुक पैदा करता है।

बिहारी बहुमुखी काव्य–प्रतिभा के धनी थे। उन्हें लोक–व्यवहार एवं शास्त्रा–जगत् का व्यापक ज्ञान था। यही कारण है कि उनके दोहों में कहीं वैद्यक, कहीं गणितशास्त्रा के ज्ञान–प्रमाण मिलते हैं तो कहीं पौराणिक और ऐतिहासिक ज्ञान के सूचक–सन्दर्भ भी उपलब्ध होते हैं। यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि बिहारी को इन विषयों की अच्छी जानकारी थी। शास्त्र, इतिहास और लोक का सहज ज्ञान रखने वाले बिहारी बहुज्ञ कवि की श्रेणी में आते हैं। नीतिशास्त्र का ज्ञान भी बिहारी के दोहों में उपलब्ध है। बिहारी में अद्भुत प्रतिभा थी इसलिए उनका लोक–सम्बन्धी ज्ञान भी पर्याप्त विस्तृत था। बिहारी ने अपने दोहों में अनेक लौकिक क्रिया–खेलों, आमोद–प्रमोद आदि के वर्णन किये हैं। उनकी बहुज्ञता का परिणाम था कि नीतिकथनों में मौलिकता की गन्ध बनी रहती है। सूक्तियाँ चमत्कारमूलक होने पर भी नीति से अनुशासित हैं। अतः स्पष्टतः बिहारी एक प्रतिभाशाली कवि थे और बहुज्ञ भी। प्रसिद्ध है कि बिहारी के काव्य में नीति, भक्ति एवं शृंगार की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है।

दरअसल, बिहारी की प्रसिद्धि एक शृंगारिक कवि के रूप में अधिक है। बिहारी का नाम सुनते ही ध्वनित हो उठता है कि वह हिन्दी के ऐसे कवि हैं जिन्होंने शृंगारिक दोहे–मात्रा रचे हैं। यह अनुमान और धारणा लगभग सही भी है, क्योंकि बिहारी का काव्यपाठ इसी पृष्ठभूमि में किया

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

गया है। पाठकों और आलोचकों ने खोज–खोजकर बिहारी के शृंगारिक दोहों को एकत्रा भी किया। बिहारी शृंगार के कवि हैं, इस बात को पुष्ट करने के लिए अली कली ही सौं बँध्यौंय वाला दोहा खड़ा कर दिया गया और सटपटाति सी ससिमुखीय वाला दोहा तथा झीने पट में झिलमिली, झलकनि ओप अपारय वाला दोहा भी उद्धृत कर दिया गया है। शृंगार–विषयीन और भी सैकड़ों दोहे उठाकर उन्हें शृंगारी, घोर शृंगारी कवि कहकर हाशिये पर रखने की पूरी कोशिश की गयी है। संयोग–वियोग के उन शृंगारिक प्रसंगों को बार–बार उठाया जाता रहा जिनके आधार पर उन्हें घोर शृंगारवादी कवि कहकर अलग–थलग किया जा सकें। कुछ आचार्यों की दृष्टि में शृंगार का लौकिक वर्णन कर बिहारी ने अधम कवि–कोटि का परिचय दिया है। आचार्यों और मीमांसाकारों का ध्यान इस वस्तु–सत्य की ओर जाना चाहिए था कि रीतियुग में रहते हुए युगसत्य के आलोक में यही काव्यरीति सम्भव थी। दरबारी संस्कृति में रहने–रचने के कारण शृंगार के इसी मनोविज्ञान का अभिरक्षण सम्भव था। नहीं तो विचार का विषय है कि बिहारी शृंगार के रसराजत्व के उपस्थापन का कविकर्म निभा रहे थे। 'बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय' का लौकिक अर्थ एक होगा, अलौकिक–आध्यात्मिक अर्थ दूसरा। यदि 'मुरली', 'राधा' और 'कृष्ण' का आध्यात्मिक संवाद इसे मान लिया जाय तो दृष्टि और अर्थ का कोण बदल जायेगा। बिहारी एक भक्तकवि थे। 'बिहारी सतसई' के रूप में आया हुआ दोहा मेरी भव बाध हरौ, राध नागर सोइय क्या भक्तिभाव का रसोद्रेक नहीं करता? राधावल्लभी सम्प्रदाय में दीक्षित कवि–भक्त बिहारी की दृष्टि में तीर्थ आदि में भ्रमण की अपेक्षा राधा–कृष्ण की तन–द्युति का दर्शन अधिक वरेण्य और श्रेयस्कर है–

तजि तीरथ हरि–राधिका, तन–दुति कर अनुराग।

इतना ही नहीं, बिहारी राम–भक्त होने का भी संकेत करते हैं–

मन काँचे नाचै वृथा, साँचै राँचै राम।

बिहारी के शृंगार–निष्ठ कवि में भक्ति–भाव के लिए जगह का होना आश्चर्य का विषय हो सकता है, परन्तु असम्भव नहीं है। सूरदास में भी शृंगार का प्रकर्ष है। परन्तु, क्या वे कृष्ण–भक्त कवि नहीं हैं? शृंगार का भक्ति से बैर नहीं है, बल्कि शृंगार भी एक भक्ति है। दर्शन और रहस्य की भाषा में 'शृंगार' महाभक्ति है।

कोई दो मत नहीं कि बिहारी नीति–निपुण कवि थे। बिना नीतिज्ञ हुए दरबारों में टिक पाना असम्भव था। शास्त्राज्ञान के साथ–साथ लोकज्ञान में पारंगत होना भी दरबारी–कवि, राजकवि होने के लिए आवश्यक शर्त होती है। वाक्पटुता, चमत्कारिता, बहुज्ञता और विवेक सम्पन्नता रीति–रचनाकार की निधि हुआ करती है। लोकज्ञान की सम्पन्नता नीतिकथन के लिए आवश्यक है। बिहारी सभी दृष्टि से योग्य और निष्णात थे। नीतिकथन में बेमिसाल और अद्वितीय। बिहारी के कतिपय प्रमुख अनुभव–भरे नीतिकथन (लोकज्ञान) उल्लेख हैं जो तमाम लोगों की जबान पर चढ़े रहते हैं–

1. कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
   वा खाए बौराय जग, या पाए बौराय।।
2. स्वारथु सुकृतु न स्रम वृथा, देखु बिहंग विचार।
3. जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीति बहार।

सचमुच लोकबोध और शास्त्राबोध के वैदुष्य–प्रतिमान बिहारी नीति–भक्ति और शृंगार के त्रिकूट थे। तथ्य और सूक्ति–चमत्कार के प्रयोग में महासिद्ध कवि।

बिहारी का काव्य–सौन्दर्य– बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि होने के साथ–साथ प्रतिभावान कवि भी थे। बिहारी ने केवल 713 मुक्तक दोहों और सोरठों की रचना करके जो ख्याति अर्जित की, उसकी समानता हिन्दी साहित्य में तो क्या, दूसरी भाषाओं में भी करने वाला नहीं मिलता। बिहारी दरबारी कवि थे। अतएव उनके यहाँ शृंगार–रस के दोहों की अधिकता है। नारी के अंग–प्रत्यंग के चित्राण में ये बेजोड़ हैं। बिहारी एक ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाओं में अनुभाव की अत्यन्त सटीक सृष्टि हुई है। उनका वियोग–वर्णन भी अत्यन्त प्रभावी बन पड़ा है। बिहारी की रस–व्यंजना का पूर्ण वैभव उनके अनुभावों के विधान में दिखाई पड़ता है। अधिक स्थलों पर तो इनकी योजना की निपुणता और उक्ति–कौशल के दर्शन होते हैं, पर इस विधान में उनकी कल्पना की मधुरता झलकती है। अनुभावों और भावों की ऐसी सुन्दर योजना कोई शृंगारी कवि नहीं कर सका है। 'सतसई' का एक प्रसिद्ध दोहा देखा जा सकता है–

बतरस लालच लाल की, मुरली ध्री लुकाइ।
सौंह करैं भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ।।

बिहारी ने लक्षण ग्रन्थों की रचना नहीं की है, किन्तु उनकी 'सतसई' रीतिकालीन काव्य–प्रवृत्तियों का सफल प्रतिनिधित्व करती है। 'सतसई' में उन्होंने नख–शिख नायिका भेद, शृंगार–रस, (संयोग–वियोग), षट्ऋतु, अलंकार आदि सभी विषयों का वर्णन किया है। ये सभी विषय रीति की परम्परा के अनुकूल हैं।

मुक्तक–परम्परा में बिहारी का स्थान शीर्ष पर है। 'सतसई' में बिहारी ने अलंकार, रस, भाव, नायिकाभेद, ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति, गुण आदि का ध्यान रखकर सुन्दर

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

दोहे रचे हैं। यह सतसई परम्परा की एक उज्ज्वल कड़ी है। इन्हीं तत्त्वों के कारण बिहारी की 'सतसई' रीतिकाल की प्रतिनिधि रचना मानी गयी है। 'बिहारी सतसई' पर अनेक टीकाएँ भी लिखी गयीं, जो इसकी लोकप्रियता का प्रमाण है। डॉ. ग्रियर्सन के अनुसार, यूरोप में 'बिहारी सतसई' के समकक्ष कोई रचना नहीं है। बिहारी ने प्रेम और कला दोनों का महत्त्व अंकित किया है, बिहारी का यह दोहा प्रमाण है–

तन्त्रीनाद कवित्त रस, सरस राग रति रंग।
अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग।।

बिहारी का सम्पूर्ण काव्यजीवन काव्यसाधना में ही व्यतीत हुआ। इसलिए उनका एक–एक दोहा मर्मस्पर्शी है और हमारे समक्ष सौन्दर्य और प्रेम–क्रीड़ा की मनोरम झाँकियाँ प्रस्तुत करता है। बिहारी ने अपने संक्षिप्त वर्णन और नपे–तुले शब्दों में किसी वस्तु, व्यक्ति या भाव का जगमगाता रूप निखार कर प्रस्तुत किया है। बिहारी को जीवन का गहरा बोध था। वे किसी भी क्षेत्रा के उथले ज्ञान को निकृष्ट मानते थे। दरअसल, शास्त्र और लोक का जैसा सामंजस्य बिहारी के काव्य में मिलता है, वैसा उनके युग के अन्य दोहाकारों में कम है।

बिहारी ब्रजभाषा के कवि थे। ब्रजभाषा का परिष्कृत और निखरा हुआ रूप बिहारी के दोहों में देखा जा सकता है। बिहारी का बचपन बुन्देलखण्ड में व्यतीत हुआ था, फलस्वरूप उनकी भाषा में अनेक बुन्देलखण्डी शब्द सहज रूप से समाविष्ट हो गये हैं। भाषा पर इनकी अद्भुत पकड़ है। भावानुरूप शब्दों को चुनने, सँवारने और चमकाने में उन्हें महारत हासिल है। गम्भीर से गम्भीर तथा कवित्त और सवैयों में व्यक्त किये जाने वाले भाव को दोहा जैसे छन्द में भरने की सामर्थ्य होने के कारण उनके दोहा–काव्य के सम्बन्ध में यह उक्ति अत्यन्त प्रसिद्ध है–

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगें, घाव करें गम्भीर।।

बिहारी ने अपनी प्रकृति के अनुकूल अनुप्रास, यमक, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, अतिशयोक्ति और अन्योक्ति जैसे अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है। कहीं–कहीं तो इनके एक ही दोहे में चार–पाँच अलंकार एक साथ देखने को मिल जाते हैं। बिहारी ने केवल 'दोहा' छन्द को ही अपनाया है। बिहारी वाक्सिद्ध एवं रससिद्ध कवि थे। श्रृंगाररस का जितना सुन्दर अभिव्यंजन बिहारी सतसई में मिलता है उतना आकर्षक व सहजग्राह्य वर्णन अन्यत्रा देखने को नहीं मिलता। आचार्य शुक्ल को बिहारी के दोहों पर रीझ कर कहना पड़ा–

बिहारी के दोहे क्या हैं, रस के छोटे–छोटे छींटे।

कुल मिलाकर बिहारी रीतिसिद्ध, वाक्सिद्ध और श्रृंगारसिद्ध रससिक्त कवि थे। थोड़े शब्दों में अधिक कह लेने वाले विदग्ध दोहासिद्ध कवि!

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ।
2. 'बिहारी रत्नाकर' –श्री जगन्नाथदास रत्नाकर 1982, वैभवलक्ष्मी प्रकाशन, वाराणसी।
3. मध्ययुगीन काव्यसाधना– रामचन्द्र तिवारी 1997, भवदीय प्रकाशन, वाराणसी।
4. मध्ययुगीन रागविराग –डॉ. रामदरश राय, डॉ. मंजु त्रिपाठी 2007, नीलकमल प्रकाशन, गोरखपुर।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास –डॉ. नगेन्द्र –2002. –03 नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।
6. मध्यकालीन काव्य ,डॉ. प्रेमव्रत तिवारी , डॉ. रामनरेश मिश्र–2018, नीलकमल प्रकाशन, गोरखपुर।

*****